NH Notes - 01

‘धनाणे नगर की लाड़ली, ब्याही न्यडाणे गाम’

धनाणे नगर की लाड़ली, ब्याही न्यडाणे गाम,

घरधालयां आळे ठयोळे की बीरमती, पाल्ले मर्द का नाम|

दो तीलाँ ऊपर धर रपिये ग्यारह सौ, करें मंडळी के नाम,

हे भाग्गां आळी थारा खेड़ा बसो, थारा बसो सुखधाम||

डोका दे अन्न दे, थारी थाळी भरें भगवान,

थारी थाळी भरें भगवान, थारा पूरा हो हर मान!

अथवा

ये न्यडाणा नगर आबाद रहे, सुख तै बसो ओ राम,

धनाणा नगर की लाड़ली अर ब्याही न्यडाणे गाम|

अर पाल्ले की धर्मपत्नी बीरमती सै नाम,

एक तीळ अर ग्यारह सौ रपिये करे पार्टी के नाम||

करया प्रेम से दान, नगर मैं आनंद करियो जी।

अर हाम भी न्यू कह दयांगे, अक धन हाथां के मैल थारे,

यश बाकी रह ज्यांगे नगर, मैं आनंद करियो जी।

अर भले घरां की बहु बेटी उरै दान करण नै आवैं,

अर भूखे घर की न्यू देखै जणू रेल मैं ऊँट लखावै।

नगर मैं आनंद करियो जी, जय नगरी जय खेड़े की!

हरियाणवी ग्रामीण सभ्यता और लिंग स्व्छंदता की एक ऐसी परम्परा जो लुप्त बेशक होती जा रही हो परन्तु ऐसे लोगों का मुंह बंद करने का ऐसा अद्ध्याय है जो कहते हैं कि हरियाणा में नारी को अधिकार नहीं, या वो स्व्छन्द नहीं और हर बात के लिए मर्द पर निर्भर है|

आप में से जिस-जिस ने भी हरियाणा की गाँवों-गलियों में बचपन गुजारा है, ऐसे छंदात्मक धन्यवाद शैली के तुकबंद सूर जरूर सुनें होंगे| जहां कहीं भी हरियाणवी ग्रामीण आँचल में सांग, बाद्दियों के खेल, साइकिल वाले के खेल आदि-आदि जैसे स्वच्छ मनोरन्जन के खेल होते थे उनमें सबसे ज्यादा दान-पुन: औरतें ही करती थी|

इन ऊपर लिखी चार पंक्तियों में कुछ बदलता था तो बस दान देने वाली के पीहर (मायका) का नाम, जिस गाँव में सांगियों-बाद्दियों के खेल हो रहे होते थे उस गाँव का नाम, उसका और उसके पति का नाम और दान की राशि या सामग्री| और ख़ास बात यह होती थी कि यह उद्घघोष औरत के ही दान देने पे ख़ास हुआ करता था, मर्द के देने पर नहीं| मैंने इन पंक्तियों में जिन गाँवों के नाम लिए हैं वो मेरे ननिहाल और मेरे अपने गाँव के लिए हैं|

पता नहीं अब यह परम्परा जिन्दा भी है या तथाकथित हरियाणा समाज के विरोधियों के सूरों में दब गई है| परन्तु जब भी किसी सांग या बाद्दी के खेल में जाता था और किसी महिला के द्वारा दान देने पर ऐसी उद्घोषणा सुनता था तो रोमांचित हो उठता था कि हमारे यहाँ औरतें सिर्फ वो नहीं कि चार-दिवारी में रह के काम करो अपितु दान-पुन: में खासकर इन कार्यकर्मों में तो उनकी अपनी स्व्छंदता होती थी और घर के मर्द की जगह खुद आ के दान देती थी और वो दान उनके ही नाम से घोषित किया जाता था| फिर सांग या बाद्दियों के खेल गाँव के गोरे पे हुए, चौराहे पे हुए या गाँव की परसों-चौपालों में| और क्या दान दिया कितना दिया, इसके लिए वो किसी को जवाबदेह भी नहीं होती थी|

शब्दावली:

तीलाँ: यानि आदमी या औरत की फुल ड्रेस का कपड़ा, चद्दर-खेसी या लोई|

खेड़ा: गाँव का वो छोटा मंदिर जो गाओं के बुजुर्गों द्वारा गाँव की स्थापना के वक्त स्थापित किया जाता है और पूरे गाँव का सूचक होता है, आधुनिक भाषा में कहूं तो "logo/symbol"|

डोका: दूध

ठयोळा: गाँव की भिन्न-भिन्न वंशावलियों में से एक वंशावली जो कि पहले आज की RWA (Residential Welfare Associations) के रूप में रहती थी|

Phool Kumar Malik - Nidana Heights - Dated: 18/12/2013